

ओम शांति,

सभी आराम करके फ्रेश हो कर आये है? आराम होगया? भोजन अच्छा लगता है? अच्छा । अब यह बुद्धि का भोजन स्वीकार करेंगे बहुत अच्छी तरह मेरा रस है कि आप सभी के लिए जीवन उपयोगी कुछ ऐसी बातें में आपके सामने रखदूँ जो आपको सदा ही काम आये । इनको आप यहाँ से अपने साथ ले जाएँ और अपने जीवन कि प्रयोगशाला में अच्छे अच्छे प्रयोग करें । आप सब जानते है संसार भौतिकता कि चक चौंध में है । मनुष्य समस्याओं और तनाव में घिरता जा रहा है इस कारण से सभी मनुष्य अपनी शक्तियों को भूल गए है शक्ति शरीर कि शक्ति नहीं धन कि शक्ति कि भी बात नहीं कर रहे है हमारे सामने विज्ञान कि शक्ति भी बहुत ज्वलंत स्वरुप में विध्यमान है । हम बात कर रहे है मनुष्य अपनी शक्तियों को भूल गया है । हम सभी के पास बहुत शक्तियां है में आप सभी को याद दिलाऊं मनोवैज्ञानिक कहते है जो लोग मन कि स्टडी करते है, मनोविज्ञान एक बहुत इम्पोर्टेन्ट बात कहता है मनुष्य के मन में अनंत शक्तियों का भण्डार है वोह सब सोयी हुयी है उन्हें जगाओ जागृत करो लेकिन इसपर मनोवैज्ञानिको ने बहुत कम प्रकाश डाला है कि उन्हें जगाएं कैसे? यहाँ आप को उसके लिए थोड़ी थोड़ी लाइट मिल रही है दो तिन दिन में सारी तो नहीं मिल जाती ।

में भी आपके सामने कुछ ऐसी बातें रखूँगा कि हम सभी अपने अंदर सोयी हुयी शक्तियों को जागृत कर के अपने इस जीवन का सम्पूर्ण सुख, शांति, आनंद प्राप्त कर सके । जीवन संघर्ष में ना बीत जाए, जीवन उतर चढ़ाव का खेल ना बन जाए जैसे लोग कहते है संघर्ष ही जीवन है जीवन संघर्ष है में कहूँगा ऐसा नहीं हम अपने जीवन को अपनी शक्तियों को ऐसे सुंदर रूप से चलायें कि हमारा जीवन संघर्षो से मुक्त हो जाए क्यूंकि किसी के भी जीवन में भी अगर निरंतर संघर्ष रहता है तो उसकी बुद्धि का विकाश नहीं होगा उसकी सम्पूर्ण शक्तियां संघर्षो में समाप्त होती रहेगी ।

तो आप सभी ने यहाँ पर सवरे के पहले पहले लेशन में आत्मा का ज्ञान और आज सवरे क्या सुना था? परमात्मा का ज्ञान दोनों का संक्षिप्त परिचय कहेंगे हम । ज्ञान तो बहुत विशाल है परन्तु शुरुआत आपने कर दी में सब से इम्पोर्टेन्ट चीज पहली आपके सामने रखूँगा मनुष्य कि शक्तियां कैसे नष्ट होती है? क्यूँ में आपको यह बता रहा हूँ? क्यूँ यह जानना जरुरी है? और क्यूँ शक्तियों के नष्ट होने के प्रहाव को रोकना भी जरुरी है? एक बहुत इम्पोर्टेन्ट बात अपने ध्यान में रख कर आप चलेंगे हमने ईश्वरीय महावाक्यों में एक अति गुह्य बात जानी थी अब के ३५ साल पहले अब वोह है समस्याएं क्या है? ध्यान देंगे सभी आप एक नयी लाइन प्राप्त करें इस बात से अपने जीवन में । **समस्याएं और कुछ नहीं कमजोर मन कि रचना है ।** तो मेने जब यह बात सुनी थी तो तुरंत मुझे विचार आया कि यदि कमजोर मन समस्याओं को क्रिएट करता है तो शक्तिशाली मन उन्हें नष्ट भी करेगा । इसके बहुत सारे प्रयोग किये जीवन में और दुसरो से भी कराएं आपके बिज़नस में, आपके उद्योग में, आपके परिवार में, आपके पर्सनल लाइफ में जो भी समस्याएं आती है उन्हें आप मन के सुंदर विचारो के द्वारा समाप्त कर सकते है । मन कि पॉजिटिव थिंकिंग के द्वारा समाप्त कर सकते है ।

तो हमें अपनी शक्तियों को बढ़ाना है कैसे नष्ट होती है वोह? कुछ थोड़ी सी बात से आप ध्यान में लाएंगे

- I. जब मनुष्य को क्रोध आता है उसकी बौद्धिक शक्ति तेजी से नष्ट होने लगती है,
- II. जब मनुष्य बहुत टैसन में रहता है तब उसकी मानशिक शक्तियां तेजी से नष्ट होने लगती है,
- III. उसके मन में यदि नेगेटिव विचार चलते है व्यर्थ का चिंतन चल रहा है कोई चिंता उसको सता रही है तो उसकी मन कि शक्तियों में पतन होता रहता है । एक और चौथी मोटी सी बात
- IV. जो व्यक्ति बहुत बोलता है उसे जानना चाहिए वोह अपनी आंतरिक शक्तियों को तेजी से कट रहा है बोलने में भी उसकी शक्तियां व्यय होती है सब जानते है जो टीचर होते है स्कूल में पढ़ाते है तिन चार पीरियड के

बाद उन्हें थकान होने लगती है क्योंकि बोलने में शक्तियां यूज होती है ज्यादा बोलने में शक्तियां नष्ट होती है सब से पहली चीज जैसे हम सभी ध्यान रखते हैं हम अपने धन को नष्ट ना करें क्योंकि वोह हमने मेहनत से कमाया है वैसे ही हमें ध्यान रखना चाहिए हम अपनी आंतरिक शक्तियों को नष्ट ना करें । बहोत मूल्यवान है यह शक्तियां, जिसके पास यह शक्तियां ज्यादा है उनका जीवन विघ्नो से मुक्त है, जिसके पास यह शक्तियां बहोत है उसका मार्ग सहज सफलता के लिए खुला रहता है, जिसके पास यह शक्तियां बहोत अच्छी रहती है उसको अपने पारिवारिक जीवन का बहोत सुख और प्रेम प्राप्त होता है । जो अपनी शक्तियों को बिखेर देते है जिन मनुष्यो को अपनी विशेष शक्तियों के महत्व का ज्ञान नहीं है वोह जीवन में और जीवन के अंत काल में बहोत कष्ट पाते है उन्हें समस्याओं से गुजरना पड़ता है परन्तु हमारा जीवन ऐसा भी हो सकता है जिसमें समस्याएं हो ही नहीं । कलयुग में भी जब कि आप सब सुन रहे है यह कलयुग का अंतिम समय आकर पहोच रहा है लोग भविष्य वाणियां तो करते रहते है लेकिन ऐसा कुछ नहीं होने जा रहा है में आपके ब्रेन को साफ़ कर देना चाहता हूँ ऐसा कुछ नहीं होने जा रहा है कि २१ dec २०१२ के बाद यह संसार रहेगा ही नहीं लेकिन एक भयानक प्रक्रिया प्रारम्भ हो जायेगी और वोह प्रक्रिया पहले भयानक रूप में होगा फिर उसका सुंदर स्वरूप मनुष्य के सामने आता जाएगा ।

तो सब से पहले सभी यहाँ बैठ कर विचार करें मेरी आंतरिक शक्तियां जहाँ जहाँ नष्ट होती है उन दरवाजो को बंध करना है क्रोध में, चिंताओ में, तनाव में या ज्यादा बोलने में । चार बार्ते आप सभी मुख्य रूप से याद रखेंगे । ज्यादा हम सोचते तो नहीं है? ऐसा तो नहीं कि छोटी सी बात किसी ने केह दी और सारा दिन हम सोच ही रहे है? मन कि स्थिति हमने बिगाड़ ली है, हम उदास हो गए है, हमने अपनी खुशी को तिलांजलि दे दी है । सावधान रहे इस बात के बारे यह शक्तियां बहोत काम आएगी । मेने बहोत सारे प्रयोग उन युवको से कराएं जो कहीं इंटरव्यू देने जा रहे थे जो नौकरी के लिए जा रहे थे और मेने देखा कि जिन्होंने अपनी आंतरिक शक्तियों को केंद्रित रखा है उन्हें पहले ही प्रयास में सम्पूर्ण सफलता चाहे उन्होंने कोई इंटरन्स एग्जाम दिया किसी हायर एजुकेशन के लिए या कहीं नौकरी के लिए इंटरव्यू दिया और जिन लड़को को इन स्टूडेंट को जीवन में आंतरिक शक्तियों कि वैल्यू का कोई आभास नहीं रहा । जिन्होंने अपने जीवन को ज्यादा नेगेटिव बना दिया जो बचपन से ही क्रोध के शिकार रहे उन्हें सफलता का मार्ग बहोत कठिन लगा बहोत मेहनत करने के बाद कुछ प्राप्त किया ।

हम सहज मेहनत से भी सब कुछ प्राप्त कर सकते है ऐसा हम सभी अपने जीवन का लक्ष्य बनाएंगे । तो सब से पहले में आप सभी से प्रैक्टिस करना चाहूंगा जो आप रोज किया करेंगे । में एक इम्पोर्टेन्ट बात आपके सामने साथ लेकर चलूंगा सवेरे उठते ही पहले दस पंद्रह मिनट आप केवल अपने को देंगे । यहाँ से आप संकल्प कर लें उठते ही हम अखबार नहीं पढ़ेंगे व्यापारी वर्ग जरा देर से सोता है और देर से उठता है यदि आप थोडा सा इसको चेंज करलें समय पर सोना और थोडा समय पर उठना तो यह शरीर के स्वास्थ्य के लिए मन के स्वास्थ्य के लिए मन कि शांति और सुखो के लिए बहोत बड़ी बात होगी । क्यूँ सवेरे अखबार नहीं पढ़ना चाहिए में इस बात के विस्तार में आपके साथ बाद में चलूंगा लेकिन सब से पहले हम एक अभ्यास करेंगे ।

इन आंतरिक शक्तियों को बढ़ाने के लिए सवेरे उठते ही आप एक छोटी सी प्रैक्टिस करेंगे जो कल आपको सिखा दी गयी है । में आत्मा यहाँ बैठी हूँ संकल्प देंगे अपने को विचार देंगे में आत्मा इस देह कि मालिक हूँ ज्योति हूँ अपने को देखेंगे आप अपने को देख सकेंगे थोड़ी प्रैक्टिस से इससे आप महसूस करेंगे आप पुनः फ्रेश होंगे । अगर आप एक मिनट कर लेते है हमारे यहाँ जो आने वाले है ज्ञान और योग सिख चुके है उन बिज़नस वालें भाई बहेनो को हम सिखाते है कि यदि हर घंटे में एक मिनट आप सोल पर केंद्रित कर लो अपने को आत्मा कि और ले जाओ केवल एक मिनट तो आप पुनः एनर्जी को गेन करेंगे आपको लगेगा पिछले घंटे कि सारी थकान दूर हो गयी । आपका मन,

आपकी बुद्धि फिर से एनर्जेटिक हो गयी है रिफ्रेश हो गयी है उसकी थकान मिट गयी है। तो चलो जरा बैठे और देखे अपने को सभी अपनी बुद्धि को बुद्धि से ध्यान लगया जाता है भृकुटि के बिच में अपने को स्थिर करें में आपको संकल्प दे रहा हूँ में चमकती हुयी आत्मा दोनों भृकुटियों के बिच बिराजमान हूँ देखे अपने को में चमकती हुयी मणि हूँ, यह मस्तक मेरा सिंहासन है, में आत्मा राजा हूँ, इस देह कि मालिक, में ज्योति हूँ, मुझ से चारो और प्रकाश कि किरणो फैल रही है।

ओम शांति।

यह छोटी सी प्रैक्टिस है किसी भी कर्म को करने से पहले आप किया करें। आप अपने बिज़नस दूकान में पहुँचते है एक मिनट कर लिया करें यह फिल करने कि बात है कि में यह शरीर नहीं हूँ। हम सब जानते है ऐसे शरीर हमने अनेक लिए है छोड़े है यह हमारा शरीर है अब हमारे पास में आत्मा इसकी मालिक हूँ, राजा हूँ, यह विचार आप अपने को दो राजा बन जाओ, इसको कहते है स्वराज अधिकार, स्वयं पर राज करना यह बहोत बड़ी चीज है कल आपने विस्तार से इसके बारे में सुना है। इससे शक्तियों में वृद्धि होगी मन कि गति धीमी हो जायेगी सब को याद रखना है मन जितना तेज गति से चलेगा मन कि शक्तियां उतनी ही नष्ट होगी और मन कि गति को रोक ने का यह स्वर्वोत्तम उपाय है में आत्मा हूँ। आप मे से कईयों ने यह अध्ययन किया होगा या जानते होंगे प्राचीन काल से भारत में जितने भी योग के सिस्टम चालू रहे है उनमें शुरुआत हुयी महर्षि पतंजलि का योग राजयोग किताब भी लिख दी थी उसने योगदर्शन उसमें और आजतक लोगो ने बहोत सारी खोजे कि और एक सिद्धांत निकल दिया कि **स्वांस कि गति को जितना कम करेंगे मन कि गति उतनी ही कम होगी।**

आपने सुना हो आजकल प्राणायाम का काफी प्रचार स्वामी रामदेव ने कर दिया है तो जिनका स्वांस कि गति धीमी है उनकी आयु ज्यादा है कछुए के लिए बताते है कि उसके प्रति मिनट चार पांच स्वांस चलते है इसलिए उसकी आयु भी चार पांचसो साल है मनुष्य के स्वांस कि संख्या पंद्रह सोलह है उसकी आयु में अछि है। जिसकी स्वांस कि गति जितनी ज्यादा आयु कम। इससे भी सुंदर जिनके मन कि गति जितनी धीमी उनका जीवन उतना ही श्रेष्ठ उनकी आंतरिक शक्तियां उतनी ही बढ़ी छड़ी उनका जीवन उतना ही विघ्नो से मुक्त। तो हम ध्यान दें **स्वांस कम करके हमें मन कि गति कम करनी है या मन कि गति कम करने से स्वांस कि गति स्वतः ही कम हो जायेगी।** विचार करेंगे सभी, यदि हम मन कि गति पे ध्यान दें स्वांस कि गति स्वतः ही कम रहेगी। क्यूंकि सारा दिन तो स्वांस कि गति पे ध्यान दिया ही नहीं जा सकता हम को मन को सेट कर सकते है सारा दिन थोड़े से ही अभ्यास से हम मन कि गति को धीमी कर सकते है। इससे हमारी आंतरिक शक्तियां बढ़ेगी हमें शांति कि फिलिंग होगी सुखो कि फिलिंग होगी आनंद कि फिलिंग होगी और शक्तिशाली होने कि फिलिंग होगी।

दूसरी बात आज आप सभी ने परमात्मा के बारे आप सभी ने बहोत सुना है। में एक छोटा सा प्रश्न पूछता हूँ आप सब जानते है भगवान् से आपका क्या नाता है? क्या लगता है वोह आपका? पक्की बात है ना? अब मुझे विश्वास है कि आपने उसको अपना परमपिता फाधर मान लिया है आज। मान लिया है? आप को कोई नयी बात तो नहीं बतायी गयी कि वोह परमपिता है यह तो एक द्रुथ है सदाकाल से सर्व मान्य सिद्धांत है कि भगवान् हमारा परमपिता है पर आजतक किसी ने भी उसको परमपिता माना नहीं था। हम अपने को क्या कहते थे है भगवान् हम तो तुम्हारे दास है चरणो कि धूल है हम तो हमें शांति दे दो हमें सुख दे दो हमारा बिज़नस ठंडा हो गया है उसे जरा तेज करदो। ठंडा हमने किया तेज वोह करें। रोज कहते थे है प्रभु विषय विकार मिटाओ आगे जानते थे ना रोज गा लेते थे आरती मंदिरो में आरती गा लेते थे प्रभुजी विषय विकार मिटाओ और खुद को घर में आके केह देते थे विषय विकार बढ़ाओ हम बढ़ाते चलें। तुम मिटते चलो, पाप हरो देवा देवा को कहते थे पाप हरो अपने को नहीं कहते थे हम पाप करें तुम हरो दोनों अपना अपना

काम करें बहोत अच्छा सिद्धांत था ना? लेकिन अब हमें दूसरी रोशनी कि और चलना है। हम सब भगवान् से मांगते रहे मांगने वालों को क्या कहा जाता है? यह शब्द अच्छा तो नहीं लगेगा सब को पर प्रैक्टिकल में तो रॉयल बेगर्स बन ही गए थे ना? रॉयल। आप सभी को ध्यान देना है हम है भगवान् के बच्चे क्या है? मैं बुलवा रहा हूँ जानबुज के आपसे ताकि पक्का हो जाए आपके अंतर मन में समां जाए। मैं जानता हूँ आप बच्चे नहीं छोटे लेकिन मैं यह भी जानता हूँ अब आपकी यह गॉडली स्टूडेंट लाइफ शुरू हुयी है और आज दूसरा ही दिन है केवल इसलिए छोटे बच्चे ही है सभी। हम भगवान् के बच्चे है बहने थिक समज रही है वोह हमारा परमपिता है आज का जो सब्जेक्ट है उसकी और जरा चलें वोह हमारा है। स्वीकार करो भगवान् हमारा है और जो कुछ उसका है वोह किसका हुआ? हमारा यह है अधिकार कि फिलिंग हम मांग क्यूँ रहे है उससे वोह तो कहता है तुम मेरे दास नहीं लाडले बच्चे हो तुम मेरे चरणो कि धूल नहीं मेरे नैनो के नूर हो। तुम मेरे हो एक्सेप्ट करें सभी इस सत्य को स्वीकार करलें आज से आप यह कहना छोड़ें है भगवान् हम तुम्हारे दास है कृपा करो जरा यह दिन भाव जो भक्ति का था इसको छोड़ कर जरा अधिकार भाव में आजाये। वोह मेरा है उसका जो कुछ है वोह मेरा है फिर से तिन मिनट साइलेंस में बैठेंगे सभी में आपको संकल्प दे रहा हूँ आप यह विचार अपने में भरें सभी चिंतन करें गहराई से मैं भगवान् का बच्चा हूँ, वोह मेरा परमपिता है, अर्थात मेरा है, मेरा कितने समीप है, हम उसके वोह मेरा और मैं उसका, वोह प्यार का सागर है, उसका सम्पूर्ण प्यार मेरे लिए है, यह सत्य है कि वोह मुझे बहोत प्यार करता है, यह सत्य है वोह मेरी केअर भी करता है, वोह मेरा है उसका जो कुछ भी है वोह सब मेरा है, हम उसके परिवार है हम ईश्वरीय परिवार है।

ओम शांति।

यह फिलिंग रोज आप अपने को देंगे सवरे जरा बहोत काम आएगी आपको यह बात। तो हम सभी ध्यान देंगे हम भगवान् के बच्चे है। अब एक दूसरी सुंदर बात कि और आपको ले चलता हूँ येही सब उसको ग्रहण करेंगे वोह लम्बी चौड़ी बात नहीं है अभी। **अभी हम सर्व शक्तिवान के बच्चे है भगवान् सर्व शक्तिवान है तो हम कमजोर नहीं है, सर्व शक्तिवान के बच्चे कमजोर नहीं हो सकते या हो सकते है?** राजा के बच्चे भिखारी थोडा ही होंगे जो शांति का सागर है उसके बच्चे यदि शांति कि तलास में अगर दर दर भटकते हो तो सोचो उसको कैसा लगता होगा? आपके पास धन सम्पति है आपके बच्चे पड़ोसियों के पास जाकर पैसे मांगते हो और आपको पता चले तो कैसा लगेगा? भगवान् को कैसा लगता होगा जब वोह देखता होगा ऊपर से कि मेरे बच्चे और दुखी? मेरे बच्चे और शांति के भिखारी? मैं सर्व शक्तिवान और मेरे सारे बच्चे कमजोर? उसे कैसा लगेगा? लोग कहदेते है उसने ही यह सब कुछ कर दिया लेकिन उसने यह नहीं किया यह हम सब ने किया। उसने तो यह संसार बहोत सुंदर बनाया था स्वर्ग बनाया था एक बनाया था हमने इसको नर्क बना दिया गड़बड़ सारी हमारी है या उसकी? सब हमारी है हमें यह भी स्वीकार कर लेना चाहिए।

तो हम सर्व शक्तिवान के बच्चे है शक्तिशाली है एक सुंदर विचार आप अपने पास नोट करलें बुद्धि में समां लें। सवरे उठते ही आप यह विचार अपने को देंगे मैं सर्व शक्तिवान कि संतान शक्तिशाली हूँ, मैं परिस्थितियों से अधिक शक्तिशाली हूँ, ध्यान दें आप इस शब्द पर अपनी शक्तियों को पहचाने आप। हम सर्व शक्तिवान कि संतान है, हम कमजोर नहीं है। इसको हम अपने ईश्वरीय ज्ञान में एक बहोत सुंदर शब्द दिया है बाबा ने हमको तुम मास्टर सर्व शक्तिवान हो यह शब्द आप ध्यान दें। सर्व शक्तिवान के बच्चे हम मास्टर सर्व शक्तिवान है परिस्थितियों से समस्याओं से अधिक शक्तिशाली है। सवरे आप जरा अपने को याद दिलाओ यह फिर देखो इसका इफेक्ट समस्याओं का फॉर्स डाउन हो जाएगा। आप अनुभव करें आपके पारिवारिक जीवन में भी जो समस्याएं है आप अनुभव करेंगे यह संकल्प करते ही उनका फॉर्स डाउन होने लगा। प्रयोग करें अपने जीवन में मैं। मैं आप सभी को कहूंगा मैं आपको उस और ले चल रहा हूँ इस जीवन को आप सभी एक प्रयोग शाला बना दें। एक सुंदर लेबोरेटरी है हमारा जीवन

में आपके सामने कुछ प्रयोग रख रहा हूँ उन प्रयोग को आप अपने जीवन कि लेबोरेटरी में सिद्ध करके देखें एक एक चीज में कितनी शक्ति है।

सवेरे उठते ही आप अपने को विचार देंगे मैं भगवान् का बच्चा हूँ, सर्व शक्तिवान कि संतान हूँ, मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ, परिस्थितियों से अधिक शक्तिशाली हूँ। जो मेने शुरू में बात कि थी आपके अंदर कि सोयी हुयी शक्तियां जागृत हो जायेगी। हमारे पास जो अनंत शक्तियां है, शक्तियों का भण्डार है अंतर मन में वोह जागृत हो जाएगा और आपको बहुत अच्छी फिलिंग होगी। सभी एक बहुत बड़ी बात और सुनलें बड़ी बात है थोड़ी लेकिन सिंपल भाषा में आप के सामने कहूंगा सभी जानते है जो कुछ हम बोलते है हमारे शब्द तरंगो के रूप में फैलते है ना? वायुमंडल में सारे संसार में फैल जाते है हमारे शब्दो कि तरंगे ऐसे ही जो कुछ हम सोचते है हमारे संकल्पो कि तरंगे भी तेजी से संसार में फैल जाती है। जिन्होंने आप में से विज्ञान पढ़ा है वोह जानते है सब से तेज गति प्रकाश कि होती है लेकिन उससे भी तेज गति मनुष्य के संकल्प कि होती है हम जो कुछ सोचते है वोह तत्काल सारे संसार में फैल जाता है। सवेरे उठकर आपने सोचा मैं भगवान् का बच्चा हूँ, सर्व शक्तिवान कि संतान हूँ, मैं मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ, आपने यह सोचा आपके यह संकल्पो कि तरंगे चारो और फैलने लगी पहले आपके शरीर में फैलेंगी, ब्रेन में फैलेंगी, फिर आपके घर में फैलेंगी और यह तरंगे वहाँ बहुत काम करेगी। यह तरंगे जिन्हे हम वाइब्रेशन्स कहते है यह वाइब्रेशन्स उस स्थान कि समस्याओं को समाप्त करेंगे। जिस तरह के विचार आप अपने अंदर लायेंगे उसी तरह कि तरंगे आपके अंदर पहुँच कर काम करेगी।

मैं एक और बात केह देता हूँ आप सभी के सामने इससे जुडी हुयी महाराष्ट्र से कौन कौन भाई बहने आये है? महाराष्ट्र में किसकी पूजा ज्यादा होती है? गणेश कि गणेश किसका पुत्र? शिव का और आप सभी किसके पुत्र? शिव के। तो क्यूँ नहीं आप भी गणेश हो गए। थिक है आपको सूँढ़ नहीं है पर शिव के तो पुत्र हो हो या नहीं? भगवान् के बच्चे शिव के हम पुत्र है ना? मैं आपको एक बहुत सूक्ष्म बात रीलाईस करना चाहता हूँ गणेश कि दो विशेष महिमा है ना उसकी? विघ्न विनाशक, सिद्धि विनायक और विद्या पति पर दो बहुत परचित है विघ्न विनाशक और सिद्धि विनायक सिद्धि दाता आप सब जानते है। आपके रोज के जीवन में आपके परिवार में आपके धंधे में जो छोटे मोटे विघ्न आते है आप उन्हें स्वयं हल नहीं कर लेते रोज? सब रोज हल करते है ना अपने जीवन कि समस्याओं को? मैं आप सभी को याद दिलाना चाहता हूँ **सभी के अंदर विघ्नो को नष्ट करने कि शक्ति है अपनी शक्ति को पहचाने आप सभी** केवल गणेश के पास नहीं है कि हम गणेश के मंदिर में हाथ जोड़ के खड़े हो जाए या उसकी मूर्ति स्थापित करदें आठ दिन के लिए फिर उसको विसर्जन करदें और हम सोचे गणेशजी हमपे प्रसन्न हो गए और हमारे विघ्न नष्ट हो जायेंगे आप जानते है गणेश कि रोज रोज पूजा होते भी विघ्नो कि भी पूजा हो रही है विघ्न बढ़ रहे है ना? तो विघ्न विनाशक कि भी पूजा हो रही है और विघ्नो कि भी पूजा हो रही है क्यूँ नहीं हम स्वयं गणेश बन जाए? हम सभी विघ्न विनाशक भी है सभी इस शब्द को भी स्वीकार कर लें हमारे पास विघ्नो को नष्ट करने कि शक्ति है। हम उसे पहचान नहीं रहे है क्यूँकि हमने केवल यह मान लिया है कि विघ्नो को नष्ट करने वाले केवल गणेशजी है, या केवल महाकाल ही है। हम भी है हम भी उसी के बच्चे है जिनकी संतान वोह है तो सवेरे उठ कर मैं यह दूसरा आपको प्रयोग बता रहा हूँ कैसे आप यह विचार में सर्व शक्तिवान कि संतान मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ साथ साथ यह भी जोड़ दें मैं विघ्न विनाशक हूँ मेरे पास विघ्नो को नष्ट करने कि शक्ति है।

सुंदर अनुभव देखेंगे अपने जीवन में जो विघ्न आपके सामने आएगा आपको लगेगा कि यह नष्ट हो रहे है यदि आप इस अभ्यास को बहुत बढ़ा दें इसको आप मन्त्र मानलें अपना मैं मास्टर ऑलमाइटी हूँ, विघ्न विनाशक हूँ इसको याद करते रहे बहुत। आपके अंदर सोयी हुयी विघ्नो को नष्ट करने वाली शक्तियां जागृत होगी और आपको अनुभव होने

लगेगा जहाँ आप होंगे वहाँ विघ्न नहीं होंगे। कहीं बहुत विघ्न है और आप वहाँ चले गए वहाँ के विघ्न नष्ट हो जायेंगे और सत्य बात तो येही है अभी आपने क्यूंकि दो ही दिन ज्ञान लेते हुआ है पर मैं आपको यह बात केह देता हूँ आप अपने अपने सेंटर्स में जाके ज्ञान ले लेना गणेश जो यादगार है वोह हम सब कि ही यादगार है। अगर आप गणेश कि कहानी पर चिंतन करें उसको सूढ़ और उसका जो स्वरूप है वोह प्रतिक है कुछ चीजो के वोह सिम्बोलिक चीजे है हम सब में वोह शक्तियां है।

तो सवरे उठ कर आप सभी अपनी शक्तियों का प्रयोग करें अब मैं आपको एक बहुत सुंदर चीज कि और ले चलता हूँ इसी से जुडी हुई वोह है। हम सब के पास जो संकल्पशक्ति है इसको हम और कैसे कैसे यूज करें इसके बारे में हमें और क्या क्या जानना चाहिए हमारे पास शक्तियां है यह सभी मानलें यहाँ। यह कल्पना नहीं है मनुष्य के पास ही सब से बड़ी शक्ति है यदि उसके पास बम बनाने कि शक्ति है, जो विनाश कर सकता है तो उसके पास रचनात्मक शक्ति भी जबरजस्त है। उसने बड़े बड़े उद्योग स्थापित कर दिए मनुष्य ने क्या नहीं कर दिया? आप सोचो जब आप प्लेन में बैठते हो कभी इतना भारी वजन आकाश में उड़ता है जो अब से १०० साल पहले कल्पना थी हम सब सुनते थे रावण के पास पुष्पक विमान था, सोचते थे पता नहीं था या नहीं? ऐसे ही कल्पना है पुराण वादो कि वोह सब साकार हो गयी हम सबके पास बहुत शक्तियां है। उस टॉपिक को लेने से पहले में एक सिद्धांत कि बात और आपके सामने केह दूँ बहुत गुह्य है हर मनुष्य के पास जो ब्रेन है सब के पास है इस ब्रेन में अनंत शक्तियां और अनंत ज्ञान समाया हुआ है याद रखना आप हर मनुष्य का ब्रेन अनंत गया और अनंत शक्तियों का भण्डार है।

यदि मनुष्य अपने चित को शांत कर दें जो यहाँ आप सिख रहे है जिसे आप सिख सकते है। मनुष्य खुद अपने चित को थोडा समय भी तो उसकी बुद्धि का विकाश बहुत ज्यादा हो सकता है बुद्धि सब के पास बहुत जबरजस्त चीज है सुसुप्त है सोयी हुयी है टेंसन के कारण, मनोविकारो के कारण, पाप कर्मो के कारण मनुष्य का बौद्धिक विकाश यथार्थ डायरेक्शन कि बजाये नेगेटिव डायरेक्शन में चला गया है। सब के पास ज्ञान का भण्डार है सभी सिखले जीवन में यह संकल्प करें यही मुझे अपने जीवन का सम्पूर्ण आनंद लेना है। आनंद वोह सांसारिक आनंद कि बात हम नहीं कर रहे ऐसे ना हो कि हमारा जीवन उलझनो में बित रहा हो, ऐसे ना हो कि परस्पर सम्बन्धो कि कड़वाहट में हमारा समय गुजर रहा हो, सब से बड़ी समस्या आजकल कि परिवारो में सम्बन्धो में कड़वाहट पैदा हो गयी है, प्यार ने स्वार्थ का स्थान ले लिया है, अपनापन भी स्वार्थ में बदल गया है, हम सभी ध्यान दें जीवन का आनंद लेना है तो मन को शांत रखना सीखना है।

मैं आप को एक छोटा सा फार्मूला बता देता हूँ जीवन के लिए फार्मूला है ABCD फार्मूला। जवीन में जो बहुत कुछ बातें आती है।

A के दो अर्थ है अवाँइड करना और एक्सेप्ट करना है, कुछ चीजो को हम जीवन में हम अवाँइड करके चलें कुछ चीजो को स्वीकार करके चले। जन्म लेते ही एक व्यक्ति एक पैर खराब है वोह विकलांग है लेकिन वोह व्यक्ति बहुत बुद्धिमान है चरितवान् है वोह यह सोच सोच कर दुखी रेह सकता है कि मेरे को दूसरा पैर भी होता तो कितना अच्छा होता? परन्तु जिस घडी वोह स्वीकार कर लेता है कि मैं एक पैर से लंगड़ा हूँ अब मुझे इसी तरह मुझे जीवन का आनंद लेना है। उस क्षण से उसके जीवन में आनंद भर जाता है। है ना येही बात? जीवन में कुछ चीजो को जिनको हम बदल नहीं सकते स्वीकार करके शांत हो जाना चाहिए। सभी चेक करलें अपने को यहीं पर जिन चीजो को हम बदल नहीं सकते जो हमारे हाथ में नहीं है उनको स्वीकार करके शांत खुश हो जाए हमारे पास आते है बहुत लोग। एक व्यक्ति आता है दोनों टांग उसकी कट गयी युवक है ३० का बहुत अच्छा पढ़ा लिखा कंप्यूटर इंजीनियरिंग किया उसने आता

रहता है हर साल में जब उसको पहली बार देखा तो मेने पूछा क्या है आपकी मनोस्थिति? दुखी रहते होंगे? तो जान उसने लिया था उसने उतर दिया कि मेने इसको स्वीकार कर लिया है मैं दुखी नहीं हूँ, अब मैं बहुत सुखी हूँ, घर में बड़ा कारोबार है, मैं सारा अकाउंट खुद सम्भालता हूँ, यह ड्यूटी मेने लेली है मैं बिजी भी रहता हूँ, खुश भी रहता हूँ, सब मुझसे प्यार भी करते है मेरा भी सब से व्यवहार बहुत अच्छा है। अगर वोह यह सोचता रहे कि हाय मेरे दोनों पैर कट गए क्या होगा मेरा जीवन? नेगेटिव भी हो जाए तो चिड़चिड़ा भी हो जाएगा, उदास भी रहेगा, खुद भी परेशान रहेगा और दूसरे भी परेशान रहेंगे। इसलिए कुछ चीजों को स्वीकार करलो ही।

B फॉर बायपास गवर्मेंट ने सड़के बना दी ना हर बड़े शहर में बायपास रोड हम भी कुछ चीजों को बायपास करके निकल जाया करें जरूरी नहीं हर जगह टकराएं।

C फॉर कैंसिल। कुछ चीजों को जीवन में कैंसिल ही करके चलें यह नहीं करना है। बहुत अच्छी बात में कहूंगा आपको एक चीज को कैंसिल कर दें हमें अपने मुख से कभी कड़वे वचन नहीं बोलने कैंसिल। बहुत अच्छा काम आएगा।

D फॉर डू। जो कुछ करना है उसको पूरी दृढ़ता से करना है लगन से करना है इन चारों बातों में हमें थिक निर्णय करना चाहिए।

जहाँ हमें कैंसिल करना है वहाँ हम लड़ जाते है, जहाँ हमें बायपास से निकलना है वहाँ हम सीधे घुस जाए तो टेंसन हो जायेगी। जिन चीजों को हमें स्वीकार कर लेना चाहिए उनके लिए हम संघर्ष में रहे तो परेशानी बढ़ जायेगी। तो यह चार चीजे इनका निर्णय करते हुए हम अपने जीवन को तनाव मुक्त रखेंगे हमारे अंदर हमारे पास मन में अनंत शक्तियां है। सब से पहला काम हमें करना है सभी शुरू कर देंगे अभी से वोह काम भी नेगेटिव थिंकिंग को पॉजिटिव में बदलना। बहुत सुंदर काम है आपने सवरे सवरे जाकर दूकान खोली दूकान खोलते आप यह भी सोच सकते है कि पता नहीं कोई ग्राहक आएगा या नहीं? यह ना सोचो। आज सौ ग्राहक आयेंगे यह सोचो, सोचने में थोडा पैसा खर्च होता है सोचने में क्या जा रहा है सोचके तो देखो जरा। **जितना अच्छा सोचेंगे उतना ही अच्छा परिणाम दिखाई देगा।** घर से बहार निकले माताओ कि आदत होती है बच्चा बाइक पर चला माता फट से कहेगी तुम धीरे नहीं चलता तो एकसीडेंट कर देगा इसकी बजाये यह कहो तुम धीरे चलना कभी एकसीडेंट नहीं होगा। भाषा को भी पॉजिटिव करो, विचारों को भी पॉजिटिव करो।

हमेशा यह ध्यान रखना है मैं आपको एक बहुत बड़ा विचार दे रहा हूँ जो संसार में सब से बड़ा हो सकता है आप यह सुनलें और निर्णय करें कि यह सब से बड़ा है क्या। जैसे मनोविज्ञान कहता है जैसा तुम सोचोगे वैसा ही बन जाओगे। प्रैक्टिकल में भी है ना यह बात? मैं आपसे कहूंगा अब आपके अंदर यह आत्मविश्वास बढ़ाओ जैसा हम सोचेंगे वैसा ही होगा। बहुत बड़ा विचार है यह आप सोच सकते है कि यह भला कैसे होगा? काम कठिन भी है लेकिन यह हो सकता है। यदि मनुष्य अपनी मानशिक शक्तियों को नष्ट ना करें किसी बहुत अच्छे मनोवैज्ञानिक ने एक बहुत बड़ी बात कही थी मैं भी वोह कहीं पढ़ी थी मुझे बहुत प्रिय लगी उसने कहा था कि तुम्हारे सामने जो पहाड़ है यदि तुम उस पर दृस्टि डालकर संकल्प करो कि यह पहाड़ दस फूट पीछे खिसक जाए तो पहाड़ दस फूट पीछे खिसक जाएगा यदि तुम्हारे मन में संशय ना हो। संकल्प कि शक्ति कि यही गति है। हम जो काम करने जा रहे है उसमें यदि जरा भी संशय ना हो तो सफलता निश्चित है अगर आप सोचके देखें सामने पहाड़ है और उस पर दृस्टि डालो तो एक फूट पीछे खिसक जाए तो सोचने से पहले ही यह भी सोच लेंगे कि भला यह कैसे हो सकता है? सोच लेगा ना मनुष्य यह? पहले ही सोच लेगा कि यह तो होगा ही नहीं। हम अपने आत्मविश्वास को जगाये यह विश्वास पैदा करें।

एक और अच्छी बात सुनलें हमारे दृढ़ संकल्प में क्रिएटिव एनर्जी है। हमारे हर संकल्प में रचनात्मक शक्ति है इसी को जानकार मेने कहा जो हम सोचेंगे वही होगा। मनुष्य कि बहुत आदत पड़ गयी है उल्टा सोचने कि ट्रेन पकड़ने के

लिए जा रहे हैं तो पहले ही सोचते हैं ट्रेन छोट ना जाए जल्दी करो। हम क्यूँ ना यह संकल्प करें कि जब तक हम नहीं जायेंगे ट्रेन चलेगी ही नहीं। करके तो देखो जरा। आजका एक छोटा अनुभव हमारे पास डॉक्टर मुरली मनोहर जोशी आरहे थे ऊपर राजधानी दिल्ली एक्सप्रेस आती है छे बजे उसमें वोह आ रहे थे। जिसको रिसीव करने के लिए जाना था वोह मेरे साथ ही सोता है उसको बिचारे को नींद आगयी अब उसके ड्राईवर ने उसको पोने छे बजे उठाया कि चलो भाई आपको जाना है अरे में तो भूल गया अब वोह कहने लगा अब जागे क्या करेंगे? साडे छे तक तो पहुँचेंगे छोड़ देते हैं मेने कहा नहीं ऐसा क्यूँ करते हो आप जाओ तो सही ट्रेन लेट हो जायेगी। आप उनको रिसीव करेंगे। उसको विचार लगा अच्छा कि चलने में क्या हज़ा है चलते हैं तो लेके आगये मेने पूछा डॉक्टर साब मिले? तो कहा ट्रेन आउटर पर खड़ी रही बिना मतलब पंद्रह मिनट जब हम पहुँचे तब आयी। हैरानी कि बात थी राजधानी एक्सप्रेस को कभी रोकते नहीं है इधर कोई दूसरी ट्रेन खड़ी है उसको यहाँ से पांच छे किलोमीटर एक दूसरा स्टेशन है वहाँ पे खड़ा किया हुआ है।

हमारे संकल्पो में बहोत शक्ति है। आप यह भूले नहीं हमारे हर संकल्प में रचनात्मक शक्ति है। याद रखना जो हम सोचेंगे वही होगा। मैं एक उदाहरण दे देता हूँ आपको। आप लोगो का ही उदाहरण है एक बिज़नस वाला परिवार माँ बाप चार बच्चे। जो बाप था उसको बड़ा गुस्सा आता था वोह अपने लड़को को कहता था तुम बड़े नालायक हो कलयुग में बच्चे माबाप का ध्यान नहीं रखते में जब बुध हो जाऊं मेरी बहोत सेवा करना मुझे पता है तुम सेवा नहीं करोगे। मेरी बहोत सेवा करना रोज जब भी उसको गुस्सा आये तो वोह येही कहता था कि तुम मेरी बहोत सेवा करना बच्चे आजकल नालायक होते हैं माबाप कि सेवा नहीं करते। वोह बेचारे हाथ जोड़ते थे पिताजी हम आपकी बहोत सेवा करेंगे आप निश्चिंत रहो आपको कोई कष्ट नहीं होगा। माँ जो थी वोह भक्तन थी वोह कहती थी है प्रभु मुझे किसी कि सेवा नहीं लेने देना में तो बस तुम्हारे पास हँसते खेलते चली आऊँ। अब देखो दोनों कि इच्छा पूरी हुयी बाप बीमार हुआ हॉस्पिटल में रहा चार साल हॉस्पिटल में रखना पड़ा बच्चो ने खूब सेवा कि। बच्चो ने कहा पापा आप संतुष्ट तो होना हम आपकी सेवा तो खूब कर रहे हैं। बहोत दुखी होकर के शरीर छूटा। कुछ ही दिन हुए थे माँ रात को सोयी तो सवेरे उठी ही नहीं। संकल्प था ना दोनों का अपना अपना।

हमारे अपने संकल्प ही भविष्य का निर्माण करते हैं। इसलिए आप अपने घर में एक महावाक्य तो लिख कर रख ही देना बच्चे पढ़े क्यूँकि बच्चो को आप जानते हैं कि मुख से केह कर कुछ नहीं सिखाया जा सकता लेकिन आपके घरमें अच्छी अच्छी चीजे लिख के रखी होगी तो बच्चे बहोत कुछ सीखेंगे। आप लिख के रखदो **तुम्हारा पॉजिटिव चिंतन तुम्हारे उज्वल भविष्य का निर्माण करेगा।** सभी पढ़े आनेवाले आपके धंधे में भी कभी गड़बड़ हो जाए ना तो नेगेटिव सोचना नहीं यह संकल्प रखना हमारा पॉजिटिव चिंतन सब कुछ बिगड़े हुए धंधे को भी सुधार देगा। आप से किसी ने माल ले लिया और पैसा नहीं दे रहा है आजकल कि यह निति हो गयी ना बिज़नस में यह। वैसे में आप सभी को यह कहूंगा कि सभी समजदारी पूर्वक अपने बिज़नस को करें दूसरे के धन से कोई व्यक्ति सुखी नहीं हो सकता। मेने बहोत बिज़नस मेन देखे जिन्होंने इस तरह काम किये उनके बच्चे बिलकुल चरित्रहीन निकले सब कुछ खतम कर दिया। इसलिए किसी से माल लेना है समय पर पैसा दे देना है इससे परमातम दुआएं आपके साथ रहेगी उन मनुष्यो कि सुबह भावनाएं आपके साथ रहेगी आपस में प्रेम भाव रहेगा आपका धंधा बहोत अच्छा चलेगा। उतर चढ़ाव तो जीवन में आते हैं हमें उन्हें एक्सेप्ट करना होता है हमारा पॉजिटिव चिंतन हमारे उज्वल भविष्य का निर्माण करेगा। कोई आपका पैसा नहीं दे रहा है आप यह संकल्प ही करो दे देगा। यह संकल्प का इफेक्ट होगा उसके मन पर उसके मन में यह संकल्प उठेगा मुझे पैसा दे देना चाहिए। इस गति को सभी समज लें।

अब में आपको ले चलता हूँ जब आप रोज सवेरे उठे मन कि दो स्थितियों के बारें में थोड़ी सी बात आपको कहूंगा। मन कि बहोत सारी स्थितिओ का वर्णन किया है दो बहोत बड़ी स्थिति बाह्य मन और अंतर मन। मैं बिलकुल सहज भाषा

में बता रहा हूँ सब समझ सकते हैं माताएं भी। बाह्य मन इसे कहते हैं जो निरंतर चल रहा है जो हम सोच रहे हैं जब हमारा यह मन शांत हो जाता है तो हमारा अंतर मन जागृत हो जाता है। सब को अनुभव है रात को जब हम सोते हैं हमें नींद तब आती है जब हमारा मन शांत हो जाए तब अंतर मन जग जाता है। तब हम स्वप्न देखते हैं अंतर मन में सारा दिन जो कुछ भरलिया वोह भी याद आएगा स्वप्न के रूप में। अब आप ध्यान देंगे ध्यान से सुन लेंगे इस बात को मेने आपको कहा था कि सवेरे उठते ही आप अखबार ना पढ़े क्यूँ कहा था? मेने बहुतो के अखबार पढ़ने के बंध करा दिए सवेरे उठते ही पढ़ने कि यह आदत। बड़े सुखी हो गए मुझे बताते हैं जीवन में बहुत शांति आगयी। क्या होता है आपकी आँख खोली उठते ही आपने एक दो मिनट में आपने अखबार देखा अखबार कि पहली हेडलाइंस क्या होगी? जो सबसे खराब समाचार होगा ना? आज दिल्ली में फिरसे बम फटा और इतने लोग मर गए। यह आपने पढ़ा सवेरे उठते ही यह विचार आपके अंतर मन में गया। क्यूँकि सवेरे जब आप उठे हैं तो अभी अंतर मन आपका जागृत है बाह्य मन ज्यादा चल नहीं रहा है तो यह विचार आपके अंतर मन में जाकर अंतर मन कि अशांति को जागृत करेगा। जिनमे बिना मतलब भी आप टेंसन में रहेंगे इसलिए कोई भी खराब बात पहले दस पंद्रह मिनट ना आप सुने, ना पढ़े, ना चर्चा करें। पंद्रह मिनट के बाद करें ना कि सारा दिन पड़ा है ऐसा तो नहीं ना कि पंद्रह मिनट के बाद पढ़ेंगे तो समाचार बदल जाएगा? ऐसा तो नहीं होगा ना? या ऐसा तो नहीं कि पंद्रह मिनट पहले आपको जानकारी हो गयी तो आप कुछ विशेष काम कर सकेंगे कुछ भी तो नहीं है।

सवेरे उठते ही आपने यह विचार किया अब दूसरी बात ध्यान से सुनेंगे में भगवान् का बच्चा हूँ, वोह शांति का सागर है आज मुझे सारा दिन शांति से बिताना है, यह विचार आपके अंतर मन में गया और आपके अंतर मन में जो भी शांति सोयी हुयी थी वोह सब जागृत हो जायेगी आपका सारा दिन शांतिमय बीतेगा। आपने सवेरे उठते ही संकल्प किया एक संकल्प और आप देंगे अपने को में भगवान् का बच्चा हूँ मुझे बहुत अच्छा होना चाहिए में बहुत अच्छी आत्मा हूँ। आप यह कहना छोड़ दें जो मंदिरो में आजकल कहा ना कि है प्रभु में नीच पापी कपटी हूँ अपने को ही गाली देते रहते हैं रोज कोई दूसरा गाली दे दे तो क्या हाल होगा? कोई हमें केह दे कि तुम बड़े कपटी हो और मंदिर में जाके बड़े प्यार से तालियां बजा बजा कर कहते हैं में नीच हूँ, पापी हूँ, कपटी हूँ, कहते कहते वैसे ही बन गए। आज से कहना छोड़ दो आप में भगवान् का बच्चा बहुत अच्छी आत्मा हूँ में महान हूँ मुझे अच्छे काम करने हैं तो क्या होगा? यह विचार आपके अंदर जाएगा और आपके अंतर मन में जो सोयी हुयी अच्छाईया है योग्यताएं हैं टैलेंट्स हैं वोह जागृत हो जायेगी यह बच्चो को भी आप सिखा सकते हैं।

तो सवेरे उठते ही क्या क्या सोचे? पांच सुंदर विचार अपने बच्चो को आप सिखा दो कि जैसे ही उनकी आँख खुलें भले मूह धोये बिना बिस्तर पर आधी नींद में अपने को संकल्प करें क्यूँकि उस समय मनुष्य का अंतर मन जागृत है आप ऐसे भी सोच सकते हैं जैसा हम अपना जीवन बनाना चाहते हैं, जैसा हम अपना भविष्य देखना चाहते हैं, जैसा आप अपने बिज़नस का भविष्य देखना चाहते हो वैसे ही विचार आँख खुलते ही करो। तो वोह अंतर मन में जायेंगे और अंतर मन कि शक्ति बहुत जबरजस्त है वोह वैसे ही कराएगी।

लास्ट बात आपके सामने रख देता हूँ थोड़ी सी गहरी है में बिलकुल सरल शब्द का प्रयोग कर रहा हूँ मनोविज्ञान के शब्द नहीं आप अपने अंतर मन को इस तरह विचार देंगे में एक दो उदाहरण दे देता हूँ हमने कई स्टूडेंट से कराया है स्टूडेंट पढ़ने में होसियार है फर्स्ट क्लास लाता है लेकिन उसको इच्छा है १२ कि परीक्षा हो रही कि अगर मेरे ८५ % मार्क्स आजाये तो मेरा भविष्य आगे क्लियर हो जाएगा जरा। अब उसको इतना कॉन्फिडेंट नहीं है उसके नंबर आते हैं ७० % तक हम उसे येही कहेंगे कि मेहनत तो करो लेकिन उसको एक तरीका सिखा देंगे कि सात दिन तक अपने अंतर मन को एक विज्ञान दिखा दें एक चित्र दिखाएं के परीक्षा हो चुकी अब से छे मास के बाद रिजल्ट आउट हो चूका है हाथ

में मार्कशीट है और उसमें ८५ % मार्क्स है । समज गए ना? तो उसकी अंतर मन कि शक्ति उससे मेहनत वैसे ही कराएगी उसके पेपर वैसे ही अच्छे जायेगे जो एक्सामिनर चेक कर रहा है उसका मन भी वैसे ही करेगा कि उसको ज्यादा नंबर दूँ बहुत अच्छा हैंडराइटिंग है बहुत अच्छे आंसर दिए है और उसके नंबर ८५ % आजायेंगे । यह हमारे अंतर मन कि शक्ति जो वाइब्रेट होगी चारो और जो फैलेगी वोह सब कुछ कर देगी । एक व्यक्ति बहुत बीमार था नीरस हो चूका था हमारे हॉस्पिटल में आया मेने उसको यह विधि बतायी पहले तो उसकी निरसा दूर कि फिर हंसाया जरा फिर कहा देखो तुम चिंता ना करो तुम बिलकुल थिक हो जाओगे चार पाई छूट जायेगी तुम्हारी फिर उसको बताया कि तुम अपने अंतर मन को एक विज्ञान दो २१ दिन कि में थिक हो कर तिन मास के बाद दिल्ली कि सड़को पर दौड़ रहा हूँ और ऐसा ही हो गया । आप अपने बिज्ञानस के लिए भी यह विज्ञान दे सकते है आपके पास एक छोटी सी फैक्ट्री है आप उसका विस्तार करना चाहते है आप २१ दिन तक रोज सवरे उठते ही अपने अंतर मन को एक बड़ी फैक्ट्री दिखादो मेरी फैक्ट्री में १००० लोग काम कर रहे है बड़ी बड़ी चिमनिया है समय भी देना है टाइम एंड विज्ञान ध्यान रखना है टाइम उचित टाइम देना है यह नहीं कि कल हो जाए ऐसा कल तो फैक्ट्री बनेगी भी नहीं ना? पांच साल तो आपके अंतर मन कि शक्ति सब कुछ ऐसा ही करेगी आपके पास पैसा आजायेगा आपके पास ओपपोर्तुनिटी (Opportunity) मिल जायेगी आपको ऐसे साथी मिल जायेगे और आप वहाँ पहुँच जायेंगे आपके पास एक छोटा सा मकान है, आप एक छोटे से बिज्ञानस मेन है आप अपने अंतर मन को एक विज्ञान दे दें तिन साल के बाद हम एक बड़े मकान में रहे हुए है, जिसमें छे कमरे है एक डाइनिंग हॉल है बहुत सुंदर मकान है अंतर मन कि शक्ति आपको वही ले जायेगी समय गए ना? में थोड़े में बताया ऐसे तो इस पर एक घंटा बोला जा सकता है ।

आप सभी अपने मन को पॉजिटिव करके अपने मन को व्यर्थ संकल्प से मुक्त करके यह अभ्यास जो आपको सिखाये जा रहे है रोज थोडा थोडा समय देंगे पंद्रह मिनट मॉर्निंग में तो आपका जीवन सफल आपका बिज्ञानस सफलता कि और आप अपने जीवन का सम्पूर्ण एंजोयमेंट लेंगे ।

-: ओम शांति :-

-: चुने हुए महावाक्य :-

- ✓ लोग कहते है संघर्ष ही जीवन है जीवन संघर्ष है में कहूंगा ऐसा नहीं हम अपने जीवन को अपनी शक्तियों को ऐसे सुंदर रूप से चलायें कि हमारा जीवन संघर्षों से मुक्त हो जाए क्यूंकि किसी के भी जीवन में भी अगर निरंतर संघर्ष रहता है तो उसकी बुद्धि का विकाश नहीं होगा उसकी सम्पूर्ण शक्तियां संघर्षों में समाप्त होती रहेगी ।
- ✓ समस्याएं और कुछ नहीं कमजोर मन कि रचना है ।
- ✓ जिसके पास यह शक्तियां ज्यादा है उनका जीवन विघ्नो से मुक्त है, जिसके पास यह शक्तियां बहुत है उसका मार्ग सहज सफलता के लिए खुला रहता है, जिसके पास यह शक्तियां बहुत अच्छी रहती है उसको अपने पारिवारिक जीवन का बहुत सुख और प्रेम प्राप्त होता है ।

- ✓ स्वांस कि गति को जितना कम करेंगे मन कि गति उतनी ही कम होगी ।
- ✓ स्वांस कम करके हमें मन कि गति कम करनी है या मन कि गति कम करने से स्वांस कि गति स्वतः ही कम हो जायेगी ।
- ✓ अभी हम सर्व शक्तितवान के बच्चे है भगवान् सर्व शक्तितवान है तो हम कमजोर नहीं है, सर्व शक्तितवान के बच्चे कमजोर नहीं हो सकते या हो सकते है?
- ✓ सभी के अंदर विघ्नो को नष्ट करने कि शक्ति है अपनी शक्ति को पहचाने आप सभी
- ✓ जितना अच्छा सोचेंगे उतना ही अच्छा परिणाम दिखाई देगा । भाषा को भी पॉजिटिव करो, विचारो को भी पॉजिटिव करो ।
- ✓ आपके अंदर यह आत्मविश्वास बढ़ाओ जैसा हम सोचेंगे वैसा ही होगा ।
- ✓ तुम्हारा पॉजिटिव चिंतन तुम्हारे उज्वल भविष्य का निर्माण करेगा ।